REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

निर्मल वर्मा के कथा–साहित्यों में मानव जीवन की संघर्श गाथा

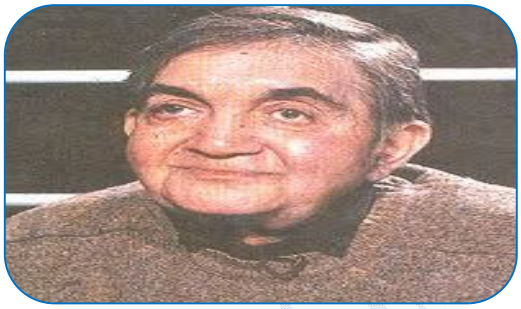

डॉ. के. सोनिया
(M.A, B.ED, PH.D)
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग , अण्डमान कॉलेज,
पोर्टब्लेयर अण्डमान.

प्रस्तावना–

निर्मल वर्मा के कथा साहित्यो में मानव की संवेदना का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत है। जहॉ एक ओर उन्होंने अपने कथा–साहित्य में मानवीय चेतना को लेकर लिखा है, वहीं दूसरी ओर अन्य विधाओं में समाज, संस्कृति, कला, साहित्य आदि सभी विषयों पर अपने बहुतूल्य विचारों को व्यक्त किया है। उन पर बराबर आलोचनाऍ होती रही है कि वे पश्चिमी और भारतीय संस्कृति की सीमाओं को तोड़कर, दोनों संस्कृतियों को एक ही नदी में प्रवाहित करते है और इसी कारण उनका पाठक भारतीय और पाश्चात्य के वातावरण में अन्तर नहीं कर पाता है कि यहॉ भारतीय परिवेश है या पाश्चात्य का। प्रसिद्ध आलोवक डॉ0 नामवर सिंह कहते है कि–''निर्मल वर्मा कुछ हद तक बाहरी आदमी है। लम्बे समय तक यूरोप में रहने के कारण वह अपने देश, अपने वातावरण में कुछ हद तक अपरिचित बन गये है। इसीलिए मुझे लगता है कि एक तरह का एकाकीपन उनके व्यक्तित्व में, उनकी मानसिकता में उनकी रचनात्मक प्रक्रिया में अन्तजाति है।''

निर्मल जी का पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा आदि अपने ही देश में हुआ। उनके हृदय में जो धड़कन थी, वह पूर्णरूप से भारतीय थी। वे अपने संस्कारों और नैतिक–मूल्यों को कभी नहीं भूले, यही उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता रही है। निर्मल जी के साहित्य की विशेषता बताते हुए कहते है कि–''निर्मल वर्मा आज हिन्दी में लिख रहे हमारे सबसे महत्वपूर्ण लेखकों में से एक है। वह नैतिक बल से सम्पन्न लेखक है और यह नैतिक बल मानवीय मूल्यों में उनके विश्वास से आता है। उनकी चिन्ता भारतीय समाज के लिए विशिष्ट वर्ग तक ही सीमित नहीं बल्कि पूरे संसार और मनुष्य की निर्यात को लेकर छटपटाहट पाऍगे। छटपटाहट के अलावा एक और तत्व महत्वपूर्ण है। आवेग।''

निर्मल वर्मा की कहानियों की अपनी विशिष्टता के बारे में सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ0 नामवर सिंह लिखते है कि–''उनकी कहानियों के बारे में बात करनी हो तो उनका एक सूत्र हे–स्मृति। उनके वाचन की बीज स्मृति में है। उनकी सभी कहानियों का एक ही शीर्षक हो सकता है–''बीते हुए की स्मृति'' रिमेम्बरेम्स ऑफ थिंग्स पास्ट।'' यहीं स्मृति के बीज उनके उपन्यासों में भी दिखाई देता है। चाहे वह उनका उपन्यास 'वे दिन', 'लाल टीन की छत', 'एक चिथड़ा सुख' ,'रात का रिपोर्टर' या 'अंतिम अरण्य' ही क्यों न हो। सभी में स्मृति तत्व गहराते है।

हिन्दी कथा–

साहित्य का स्वरूप जो आज हमारे सामने है, उसका सबसे बड़ा श्रेय सुप्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंद को जाता है। उनके पूर्व भी कहानी और उपन्यास लिखे जा रहे थे, परन्तु उसका मुख्य उद्देश मनोरंजन ही थी। उन्होंने कहानी एंव उपन्यासों के स्तर को उठाया और समाज के गम्भीर मुद्दों से जोड़ने का प्रयास किया है। डॉ0 इन्द्रनाथ मदान ने कहान विधा के विकास के संबंध में प्रेमचंद का महत्व बताया है कि–''आज से लगभग पचास साल पहले हिन्दी कहानी रेंगने की अवस्था में थी, घुटनों के बल चलती थी। चंद्रधर शर्मा और अन्य

कहानीकारों ने दूध पिलाकर इसे पुष्ट अवश्य किया, परन्तु इसे अपने पॉवों पर खड़ा किया प्रसाद और प्रेमचंद ने।'' उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी को जैनेन्द्र, यशपाल और अज्ञेय जैसे कथाकारों ने अपनी लेखनी से संजोने का सफल प्रयास किया। यह कहा जा समका है कि स्वतंत्रता के बाद देश में आर्थिक, राजनीतिक एंव सामाजिक स्तर पर परिवर्तन हुए है। इन्हीं परिवर्तनों के कारण हिन्दी साहित्य की संवेदना में बदलाव आया है।

निर्मल जी स्वयं भारत और यूरोप दोनों में रहे और वहॉ की सभ्यता और संस्कृति की पूर्णतः अनुभव किया है और दोनों ही संस्कृति के जीवन मूल्यों के अलगाव को महसूस किया। वे लिखते है कि–''यूरोप में बहुत से पार्कों, बहुत से पबों में ऐसे अकेले लोग दिखते है जो भारत में नहीं दिखते। भारत में पारिवारिक जीवन इतना सुगंठित है कि लोगों को अकेलेपन से बचने के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता। यूरोप में मुझे ऐसे ढेरों लोग मिले जो बतियाने को बेहद उत्सुक रहते थे और अगर आप धैर्यवान, सहानुभूतिपूर्ण श्रोता हुए, ऐसा भी नहीं है कि आप घर जाकर उनके बारे में कहानी लिखेंगे.... तो ये बिखरे संवाद स्मृति में अंक जाते है।'' उन्होंने इस माहौल को देखा है, जहॉ लोग अपने अकेलेपन को भोगते है। उनका अकेलापन सिर्फ उनका ही बनकर रह जाता है। वे इस अकेलेपन को महसूस करते है। पर किसी से कह नहीं पाते।

कालान्तर में भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवारों का चलना था, परन्तु अब स्वाभाविक रूप से इसमें परिवर्तन आया है। संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवारों ने ले लिया है। संयुक्त परिवारों के समाप्त होने का मुख्य कारण यह रहा है कि घर का एक व्यक्ति पर आर्थिक, धार्मिक आदि सभी प्रकार की जिम्मेदारी होती है एकल परिवारों के बढ़ते प्रचलन से समाज में व्यक्तियों में अकेलापन, तनाव, मानसिक पीड़ा, घुटन, अलगाव आदि भागवाऍ बढ़ती ही जा रही है। निर्मल वर्मा कथा–साहित्य में उनके पात्र अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए पब, पार्क, सड़कों आदि में अपना समय व्यतीत करते हुए नज़र आते है और इस अकेलेपन का मुख्य कारण उनका व्यक्तित्व है जिसे वे टूटते हुए अपने व्यक्तित्व को समेटने का प्रयास करते हुए नज़र आते है। वे अपने एक साक्षात्कार में बताते है कि ''पार्क में यही एक मुश्किल है। इतने खुले मे सब अपने–अपने में बन्द बैठे रहते है। आप कसी के पास जाकर सांत्वना के दो शब्द नहीं कह सकते। आप दूसरों को देखते है, दूसरे आपको। शायद इससे भी कोई तसल्ली मिलती होगी। यही कारण है अकेले कमरे में जब तकलीफ़ दुश्वार हो जाती है तो अक्सर लोग बाहर चले आते है– सड़कों पर, पब्लिक पार्क में, किसी पब में। वहॉ आपको कोई तसल्ली न दे, तो भी आपका दुःख एक जगह से मुड़कर दूसरी तरफ करवट ले लेती है।''

सभी मनुष्यों का प्रेम एक समान ही होता है, पर अंतर सिर्फ स्थितियों और सीमाओं का होता है। नई पीढ़ी की यहॉ मान्यता है कि प्रेम विवाहिक जीवन में अधिक समय तक नहीं रहता, इसलिए समाज में अविवाहित विवाहित स्त्री और पुरुष दोनों ही विवाहेत्तर प्रेम और काम संबंध स्थापित करने के लिए तत्पर रहते है। उन्हें जैसे ही कोई अनुकूल परिस्थिति मिलती वैसे ही वे दूसरे के साथ अपना समय, सुख–दुख बॉटने लगते है। वे विवाह के उपरांत भी किसी अन्य स्त्री–पुरुष के साथ आलिगंन एंव चुंबन करने की सीमा को लांघने का कोई मौके नहीं छोड़ते और संभोग की स्थिति तक पहूँच जाते है। जहॉ समाज में विवाहेत्तर संबंधों में वृद्धि हो रही है वहीं प्रेम आत्मीय न होकर सिर्फ शारीरिक संपर्क की संकुचित मानसिकता तक ही सीमित रह गया है।

निर्मल वर्मा ने अपने कथा–साहित्य में मॉ, मॉ ही नहीं, बल्कि एक स्त्री भी है या पिता, केवल पिता नहीं हैं, बल्कि पुरुष भी है। तभी वे उसके शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति की बात करते है। उनके यह बच्चे, साधारण बच्चे नहीं हैं, बल्कि वे बच्चे अपने माता–पिता के विवाहेत्तर संबंधों को भली–भांति जानते है। वे बच्चे अपने बचपन की मसूमियत को खो देते है और वयस्क वाली मानसिकता से चीजों को सोचते और समझते है। इसी कारण व्यक्ति अपने जीवन की तनावपूर्ण परिस्थितियों से दो–चार होता है और वह इस काबिल नहीं रह जाता कि वह आस–पास के माहौल को पूरी तरह अपना सके या पूरी तरह छोड़ सके।

निर्मल वर्मा की यह विशेषता है कि उन्होंने अपने कथा–साहित्य में समाज की संवेदना एंव मानसिकता को स्थान दिया है। उनके कथा–साहित्य में हम भारतीय एंव पाश्चात्य संस्कृति के जीवन–मूल्यों की बारीकियों को देख–परख सकते है। मानव जीवन की यथार्थता को निचोड़ कर रख दिया गया।

जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है, तब से स्त्री और पुरुष संबंधों की शुरूआत हुई है और ये संबंध समय के साथ–साथ परिवर्तित होते रहे हैं। आरम्भ में स्त्री–पुरुष बिना किसी बंधन के एक साथ रहते थे, परन्तु जब से समाज और परिवार की परिल्पिना अस्तित्व में आई है। तब से समाज में वैवाहिक संबंधों को स्वीकारा जाने

लगा है। हजारों वर्षों के बाद भी आज समाज में विवाह का स्वरूप वैसा ही है जैसा पहले था। आज भी लोग अलग–अलग जाति, सम्प्रदाय और देश–प्रदेशों में विवाह के बंधन में बंधते और जब उस विवाह को समाज स्वीकृति दे दें। जब हम अपना ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य देखते है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में विवाह ऐसी संस्था का कोई महत्व ही नहीं था।

निर्मल वर्मा के कथा–साहित्य पर चर्चा करने से पूर्व उनके पूर्ववर्ती साहित्यकारों के कथा–साहित्य में पारिवारिक संस्था का स्वरूप कैसा था? इस पर दृष्टि डालना आवश्यक है क्योंकि निर्मल वर्मा के कथा–साहित्य पर समय–समय पर यह आरोप लगाये जाते रहे है कि उन्होंने जिन जीवन–मूल्यों को अपने कथा–साहित्य को दर्शाया है, वे पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है। प्रश्न यह है कि क्या इससे पूर्व किसी कथाकार ने ऐसे जीवन मूल्यों को दर्शाया है या नहीं? इस विषय की चर्चा के लिए हम सबसे पहले सुप्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंद के गोदान की बात करेंगे।

'गोदान' उपन्यास में 'मेहता साहब' और 'मालती' अपने जीवन को विवाह जैसे बंधन में न बंधकर स्वतंत्र रूप से एक साथ रहने का फैसला करते है। प्रेमचंद ने सन् 1934–35 में जब गोदान लिखा। उस समय अपनी दूरदृष्टि का उपयोग करके भविष्य में बदलने वाले पारिवारिक सम्बंधों एंव सामाजिक परिस्थितियों को रेखांकित किया है। ''मालती ने गम्भीर होकर कहा–नहीं मेहता, मैं महीनों से इस प्रश्न पर विचार कर रही हूँ और अन्त में मैने यह तय किया है कि मित्र बनकर रहना स्त्री–पुरूष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझे पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे... कुछ विरले प्राणी ऐसे भी है, जो पैरों में यह बेड़ियॉ डालकर भी विकास के पथ पर चल सकते है और चल रहे है। यह भी जानती हूँ कि पूर्णता के लिए पारिवारिक प्रेम और इसके बाद प्रसिद्ध उपन्यासकार जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय जैसे कथाकारों ने अपने कथा–साहित्य में भारतीय समाज में हो रहे, परिवर्तन को दर्शाया है। अज्ञेय के सर्वाधिक चर्चित उपन्यास 'शेखरः एक जीवनी' भाग–12 में परिवार संस्था पर मानव के काम वासनाओं का क्या प्रभाव पड़ता है इस पर स्वंय निर्मल जी ने अपने विचार अपने एक लेख भारत एंव यूरोपः प्रतिश्रुति के क्षेत्र में व्यक्त किये गये है वे कहते है कि ''अज्ञेय अपने आरम्भिक लेखन में आधुनिक यूरोपीय साहित्य से बहुत प्रभावित रहे, जिससे लिए वे उन आलोचकों की निंदा का शिकार हुए जिन्होंने उनकी इन आरम्भिक रचनाओं में बहुत कुछ ऐसा पाया, जो अभारतीय था। यह विचित्र विडम्बना है कि इन्हीं आलोचकों को उनकी बाद की कृतियों पर हिन्दू परम्परावाद की छाया भी दिखाई दी। एक ही लेखक की जिन्दगी के पश्चिमीकरण से लेकर उसकी भारतीयता के इस विचित्र विकास को कैसे समझा जा सकता है? क्या यह यात्रा सिर्फ अज्ञेय के सन्दर्भ में सही है या यह किन्हीं अर्थों में भारतीय स्थिति का प्रतीक भी है।''

निर्मल वर्मा इस बात से परिचत है कि समय के साथ परिवार संस्था का स्वरूप बदला है। वे इसका कारण बताते है कि–''मेरी रचनाऍ मूलतः एक ही परिवार के सदस्यों के परेशानी भरे सम्बंधों या स्त्री–पुरुष के तनावपूर्ण बन्धनों से पैदा हुई स्थितियों के बारे में है। भारतीयों को संयुक्त परिवार और कुटुम्ब कबीले के लम्बे चौड़े सम्बंधों की आदत पड़ी हुई है, लेकिन पिछले 30–40 बरस में बढ़ते औद्योगिकीकरण और लोगों के भारी संख्या में अपने गॉवों कस्बों शहरों से दूर जाने के बढ़ते चलन ने इस प्रणाली को कमजोर किया है। युगल केन्द्रित परिवारों के उद्भव के बाद से अब सबको अपना जीवन खुद ही जीना है। संयुक्त परिवार के विघटन से सुरक्षा की भावना छिनी है और अब लोगों को तनाव और दबाव अकेले ही झेलने है।''

परिवार संस्था के स्वरूप के बदलाव का एक कारण यह भी है कि नारी अपने अधिकारों के लिए अधिक जागरूक हो गई है। वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है। पैरों पर खड़ी होने में सक्षम व्यक्ति। अतीत में भारतीय स्त्री हमारे परिवारों में चल रही बहुत–सी कुरीतियों और अन्यायों की शिकार रही है। नयी स्त्री के उदय से समाज में मानवीय सम्बंणों के जंजाल में तरह के तलाव भी उपजे है। भारतीय परिवार व्यवस्था और समाज में हुए इन महत्वपूर्ण बदलावों के कारण सम्बंधों में पनपी स्थितियों मेरे गल्प का केन्दीय विषय बनी।''

निर्मल वर्मा की स्वंय स्वीकार करते है कि उनकी कहानियों में संयुक्त परिवार नहीं मिलते। उनकी कहानियों में एकल परिवार को लेकर ही कहानी का ताना–बाना आगे बढ़ता है। ऐसा कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने साहित्य में पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करके, संयुक्त परिवार न दिखाकर एकल परिवारों को ही दिखाया है परन्तु जब हम उनके कथा–साहित्य को आज के वर्तमान संदर्भ में देखते है तो यह हमें पूर्णत

सत्य लगते है। उसमें समय के संबंधों में परिवर्तन होता रहा है। उनकी कहानियों में आधुनिक शिक्षा, आधुनिक रहन–सहन और इन सभी से उत्पन्न पारिवारिक और सामाजिक समस्या उत्पन्न होती है और साथ ही बढ़ती भी है। उनकी कहानी 'पिछली गर्मियों में' एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी का कथावाचक विदेश में रहता है पर अगस्त और सितम्बर की छुट्टियों में अपने घर वापस आता है। कथावाचक का पूरा परिवार है, परन्तु कथावाचक घर आने के बाद भी सुबह से शाम तक अपने मित्रों में व्यस्त रहता है। उसके परिवार में माता–पिता, भाई, बहन सभी है, किन्तु सभी एक दूसरे से कहीं–न–कहीं अलग है और अपने आपको एक–दूसरे के साथ होने से रोकते है। इसी कारण वातावरण में एक अजीब सी उदासीनता छाई रहती है। जब उसकी बहन कथावाचक से कहती है कि ''तुम रूक नहीं सकते?'' नीता का स्वर भावहीन–सा हो आया था।

''इससे होगा क्या?''
मॉ और बाबू बहुत अकेले है। जब केशी था, मुझे फ़िक़ नहीं रहती थी।
''इससे कुछ बनेगा नहीं।'' उसने कहा,''मैं चाहूँ तो भी घर ऐसा ही रहेगा।''
तुम चाहते भी नहीं।''

कथावाचक छुटिटयों में अपने घर आया है फिर भी घर–परिवार में कोई खुशी नहीं है। क्योंकि सभी अपने जीवन का अकेलेपन को भोग रहे है। ऐसा कह सकते है कि घर के सभी सदस्य अपने सुख–दुख को एक–दूसरे के साथ बॉटते है, उससे घर में रहने वाले सदस्य उस परिवार को परिवार बनते है।

निर्मल जी की अगली कहानी 'बीच बहस में' परिवार संस्था के स्वरूप को पूर्णरूप से तोड़ती हुई नज़र आती है। यह कहानी उनके विवादास्पद कहानियों में से एक है। इस कहानी का वाता वरण अपने आप–ही एक जाल है। जिसमें सारे सम्बंध झूठे और मतलबी दिखाते है। इस कहानी के वृद्ध व्यक्ति, पत्नी और उनके दो लड़के है। वह वृद्ध व्यक्ति अस्पताल में भर्ती है परन्तु उस व्यक्ति की पत्नी अस्पताल तक नहीं आना चाहती और अस्पताल आने के बावजूद अपने पति के वार्ड में मिलने तक नहीं जाती है। उस व्यक्ति के दोनों बच्चों ने पिता की जायदाद प्राप्त करने हेतु अस्पताल जाने के लिए शिफट रखी है कि सुबह से शाम तक एक व्यक्ति और दूसरी शिफट में दूसरा व्यक्ति रहेगा। इस कहानी में आधुनिक समाज के नैतिक मूल्यों को समाप्त होते दिखाया गया है कि व्यक्ति अपने परिवार के प्रति जो उसके दायित्व है उसे निर्वाह तक करना नहीं चाहते। अगर परिवार का कोई सदस्य बीमार पड़ जाये, तो वह केवल घरवालों के लिए बोझ बनकर रह जाता है। विशेष तौर पर जबवह वृद्ध हो। सोचनीय विषय है, उसकी पत्नी भी उसके लिए कह देती है कि, ''मरते के साथ मरता कोई नहीं।'' जिस व्यक्ति का समय खराब चल रहा होता है, उसका कोई साथ नहीं देता है। चाहे वह उसकी पत्नी ही क्यों न हो। जहॉ आज युवा पीढ़ी में परिवार संस्था के स्वरूप के बारे में परिवर्तन आया है वही मानवीय मूल्यों की भूमिका भी समाप्त होने लगी है।

निर्मल वर्मा के कथा–साहित्य में एकल परिवार ही दृष्टिगोचर होता है। उनकी कहानी 'माया दर्पण' में भी इसी प्रकार दिखाया गया है कि एकल परिवार है परन्तु वे साथ होते हुए भी एक–दूसरे के बीच अलगाव महसूस करते है। इस कहानी की नायिका तरन अपने परिवार के साथ रहती है। इस परिवार में पिता, भाई, बुआ सभी है, परन्तु भाई और पिता के सम्बंध मधुर न होकर, बोझिल से प्रतीत होते है। भाई इसी कारण घर छोड़कर आसाम चला गया है। भाई के चले जाने के बाद तरन अपने आपको घर में अकेला पाती है और अपने अकेलेपन के साथ जीने का प्रयास करती है। तरन और पिता के बीच संवाद नहीं होता है। इन दोनों के बीच के संवाद का जो माध्यम थी, तरन की मॉ वह नहीं रही '' जीवन में पहली बार उसने बाबू के इतने निकट जाने का साहस किया था।'' स्पष्ट है कि तरन अपने पिता से अलग है– भवात्मकता रूप से। जब भाई का पत्र आता है, तब तरन अपने भाई के पास जाने का विचार करती है। परन्तु अपने पिता के कारण वह न जाने का निश्चय करती है। आधुनिक समाज में पारिवारिक संबंधों का कोई मोल नहीं रह गया है, संबंध सिर्फ दिखावे के लिए रह गए है।

''कव्ये और काला पानी'' कहानी में बड़ा भाई परिवार और इस संसार से उबकर घर छोड़कर चला जाता है। कई वर्षों के बाद जब छोटा भाई बड़े भाई से मिलने आता है त बवह घर बेचने के लिए भाई से हस्ताक्षर करना चाहता है। वह जिस व्यक्ति से मिलता है, वहॉ पहाड़ी वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध है। जब

छोटा भाई बड़े भाई से मिलता है, तो पुराने सारे दृश्य समाने आ जाते है। ''मृत पिता के कागज़ उतने ही मृत जान पड़े रहे थे, जितने जीवित लोगों के पत्र, यदि उन सब को मास्टर साहब के स्टोव में झोंक दूँ, तो पल भर में हमारा मकान, घर और गृहस्थी के लोग, मरे और जीवित रिश्तें का लेखा–जोखा एक लपट में भस्म हो जाएगा... सिर्फ एक मैं रह जाउँगा। मैं और वे–वे जिनसे मैं इतनी दूर यहॉ मिलने आया था।'' क्या आधुनिक समाज में एक भाई दूसरे से सिर्फ इतना ही संबंध रखना चाहता है, पैतृक सम्पत्ति ही उनको मिलने के लिए विवश कर सकती है और कोई भावना नहीं?

''दो घर'' शीर्षक कहानी में भी नायक का परिवार भारत में होते हुए भी जब विदेश में इलाज करवाने के लिए नर्स से मिलता है, तब उसे वह प्रेम करने लगता है और उनके साथ रहने लगता है। उनके बच्चे भी होते है। जीवन के अंतिम दिनों में वह अपनी पत्नी और बच्चे से मिलना चाहता है, परन्तु इसी इच्छा के साथ वह मर जाता है। नायक जीवन भर दो घरों के बीच अपने अपनो अकेला–सा पाता है। इसी कारण वह सोचता है कि, ''दरअसल उस घड़ी मुझे बहुत सुखद–सा अकेलापन लगा, जो अक्सर भरे–पूरे परिवारों के बीच अचानक आ जाता है। पत्नी, लड़की, मालिक, भीतर कमरे में सोते हुए बच्चों की सॉसे, लगता है यह सब यही है, अपने भीतर का ठिठुरता प्रवासीपन ही झूठा लगता है।''

''एक दिन का मेहमान'' कहानी में आधुनिक जीवन की विसंगतियों के कारण एक परिवार जिसमे माता–पिता और एक बच्ची है। वह एक साथ न रहकर मॉ और बच्ची एक साथ और पिता अलग रहता है। नायक अपनी पत्नी और बच्ची से मिलने आता है, परन्तु वह अपने लोगों के बच्ची में रहकर अजनबीपन महसुस करता है। पत्नी अपने पति से आज भी मिलना चाहता है, परन्तु पत्नी अपनी बेटी के हाथ से एक होटल का पता भेजती है और कहलवती है कि वह वहॉ जाकर रात गुज़ार सकता है। पति और पत्नी के संबंधों में कहीं–न–कहीं ठहराव आ गया है, जो पूर्णरूप से दृष्टिगोचर होता है। ''हर दो–तीन साल बाद जब यह आता था, तो सोचता था वह कितनी बड़ी हो गई होगी और पत्नी? वह कितनी बदल गई होगी! लेकिन ये चीजे उस दिन से एक जगह ठहरी थी, जिस दिन उसने घर छोड़ा था।'' निर्मल वर्मा की अधिकांश कहानियों में संयुक्त परिवारों के साथ पर एकल परिवार है और उन परिवारों में भी संबंध बिखरते हुए नज़र आते है। निर्मल वर्मा के अनुसार पति–पत्नी का संबंध सबसे आत्मीय और गहरा होता है लेकिन बदलते समाज में सभी भावनाओं को बदलकर रख दिया है। एक दिन का मेहमान कहानी में संबंध इतने बदल जाते है पत्नी, पति को देखना और मिलना भी नहीं चाहती हे। पति जब कहती है कि ''क्या तुम्हें इतनी देर के लिए आना भी बुरा लगता है? ''हॉ'' उसका चेहरा तन गया, फिर अजीब हताशा में वह ढीली पड़ गई, ''मैं तुम्हें देखना भी नहीं चाहती–बस।''

निर्मल जी की अगली कहानी का स्वरून बिल्कुल निराला है। ''धूप का एक टुकड़ा'' कहानी में पात्र नायक या नायिका जैसे है जो अलगाव तो पसंद करते है, परन्तु विवाह संस्था का विरोध करते नज़र नहीं आते है। ''धूप का एक टुकड़ा'' कहानी की नायिका अपने पति से छुटकारा पाने के लिए गिरिजाघर के सामने के गार्डन में जाकर बैठती है और उसी के साथ घूप के टुकड़े को पकड़ने और अपने पति को भूलने को निष्फल प्रयास करती है। वह कहती है कि ''मेरी तरह धूप के एक टुकड़े की खोज में एक बेंच से दूसरी बेंच का चक्कर लगाते रहते है।'' निर्मल वर्मा की पहली कहानी से अंतिम कहानी तक आते–आते, उनकी सोच में परिवर्तन आया है। ऐसा नहीं है कि उन्होंने सिर्फ पति–पत्नी के प्रेम को ही दिखाया है बल्कि उन्होंने प्रेमी–प्रेमीका के संवेदनात्मक प्रेम को भी अपने कथा–साहित्य में स्थान दिया है। 'लवर्स' कहानी इसका उदाहरण है। यह कहानी इसी प्रकार की संवेदनात्मक को लिए हुए है। यह कहानी प्रेम कहानी न होकर, प्रेम करने का प्रयास मात्र है। इस कहानी में सामान्य युवक–युवतियों परन्तु फल–फूल नहीं पाता है। नायिका निन्दी अपने प्रेमी के पत्र लिखकर मना कर देती है, लेकिन वे दोनों एक बार फिर मिलते है। इस अलगाव से प्रेमी पर क्या प्रभाव पड़ता है। ''मैं कल रात यही सोचता रहा था कि वह 'न' कह देगी, तो क्यय होगा? अब उसने कह दिया है, और मैं वैसा ही हूँ। कुछ भी नहीं बदला। जो बचा रह गया है, वह पहले भी था वह सिर्फ है, जो उम्र के संग बढ़ता जाएगा बढ़ता जाएगा और खामोश रहेगा बन्द दरवाज़े की तरह, उड़ते पत्तों और पुराने पत्थरों की तरह और मैं जीता रहूँगा।''

''पहला प्रेम'' इस कहानी में नायक और नायिका एक–दूसरे से अलग हो गये है। फिर भी कही–न कही मानसिक रूप से अभी भी जुड़े हुए है और कथावाचक तात्विक कथन कहता है कि ''सुना है, वैश्याएँ कभी अपने पुराने ग्राहकों की चर्चा नहीं करती, किन्तु लड़कियॉ, वे जरूर अपने बीते हुए प्रेमियों की बातें करती होगीं।''

'पिता और प्रेमी' कहानी में भूतपूर्व प्रेम–प्रेमिका यात्रा के दौरान एक–दूसरे से मिलते है और एक–दूसरे ऐसे व्यवहार करते है जैसे एक–दूसरे को जानते है। ''समय बीतने लगा। उसे लगा जैस वे दोनों किसी की प्रतीक्षा कर रहें हों। किसी चीज़ के आने की या किसी चीज़ के जाने की। पुराने दिनों की यह आदत शायद अब भी थी एक दूसरे के लिए नहीं। एक दूसरे के साथ, चाहना से मुक्त, खाली।'' 'डेढ़ इंच उपर' कहानी में मुख्य पात्र एक बूढ़ा व्यक्ति अपना समय व्यतीत के लिए करने एक पब में जाता है। वह पब में शराब पीता है और अपने जीवन की त्रस्त कथा, दूसरे शराबी व्यक्ति को सुनना है और कहता है कि ''यह मैं अनुभव से कह रहा हूँ कि बिल्ली को औरतों की तरह आप आखिर तक सही–सही नहीं पहचान सकते, चाहे आप उनके साथ वर्षों से ही क्यों न रह रहे हों।''

निर्मला वर्मा के उपन्यास 'वे दिन' में हमें पारिवारिक संस्था का एक नया रूप देखने को मिलता है। इस उपन्यास के माध्यम से हम इस कथा का मुख्य पात्र 'इंदी' जो मूलः भारतीय है परन्तु विदेश में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आया है। वह इसी कारण अपनी संस्कृति से दूर हो गया है। जब उसकी बहन का पत्र आता है, तो वह उपन्यास के आरम्भ से अंत तक उस पत्र को खोलकर पढ़ नहीं पाता या यूँ कहा जाये कि पढ़ना नहीं चाहता। ''सूराख के नीचे से पन्नें पर मेरी बहन द्वारा लिखें गए कुछ शब्द बाहर झाँक रहे थे। मैंने उन्हें पढ़ा और वे मुझे कुछ अज़ीब से लगे–मुकम्मिल वाक्यों में शायद वे मुझे उबा देते, लकिन इस तरह आस–पास के पड़ोसी शब्दों से अलग होकर सूराख से बाहर झाँकते हुए वे मुझे काफी निरीह और रहस्यमय से जान पड़े, जिसके पीछे मेरी बहन थी, घर था, घर के कोने थे मैंने उसे दुबारा जेब में रख दिया। उस रात में वहाँ नहीं जाना चाहता था।'' कथावाचक अपने संबंधों के लिए कितना उदासीनता हो गया है कि वह अपनी बहन का पत्र खोलकर पढ़ना नहीं चाहता है।

वही रायना अपने पति के साथ में रहकर अपने आपको पूर्ण नहीं पाती इसीलिए उसे बार–बार अजीब, अनजान–सा डर लगा रहता है यह डर आस–पास कहीं नहीं है, बल्कि रायना के भीतर ही है वह कहती है कि '' हम दोनों साथ रहते थे लेकिन हमें लगता था जैसे हमने कोई चीज़ हमेशा के लिए खोदी है मुझे कभी–कभी अजीब–सा डर लगता था।''

रायना अपने पत्नी जॉक के बारे में बताती है कि ''वे लोग घरेलू जिन्दगी में खप नहीं पाते। जॉक ऐसी ही थी। जब मैं उसके साथ रहती मुझे कभी–कभी लगता था, जैसे हम दोनों अब भी किसी कॉन्सटेंशन कैम्प में रह रहे है एक ही घर में। उसके बाहर जॉक वह जीवित नहीं था मैं भी नहीं। हम सिर्फ उसमें रहकर जी सकते थे। लेकिन मैं नहीं रह सकी। एक दिन में बाहर आ गई। यह जानते हुए भी कि बाहर में किसी काबिल नहीं रह गई हूँ।'' वह अपने पति से युद्ध के दिनों में मिली थी। ज बवह दोनों शरणार्थी कैम्प में रह रहे थे। परन्तु विश्वयुद्ध छाया उनके घर में भी आ गई और अपने घर में रहते हुए भी उन्हें ऐसा महसूस होने लगता कि उन्होंने शरणार्थी कैम्प में शरण ले रखी है। इसीलिए उसने अपना घर परिवार छोड़ दिया और अपने बेटे को लेकर कहीं और रहने लगती है।

रायना अपने पति से कभी–कभी मिलती है। रायना प्राग में कथानायक से मिलती है और उससे बिना किसी प्रेम भावना के कुछ क्षणो को अपना बनाने का प्रयास करती है। ''एक क्षण के लिए हम दोनों ही उसे देखकर चकाचौध से हो गए। उसने हम दोनों को अपने में घसीट लिया और तब मैं चूमने लगा, उसकी बॉहों को, माथे को, बालों को, उसके होठों के बीच कटकटाते दॉतों को'' निर्मल जी के कथा–साहित्य में परिवार संस्था का खण्ड होता हुआ दिखाता गया है। वे रिश्ता जो केवल पति–पत्नी के बीच स्थापित होता है, भारतीय सभ्यता में नहीं? ऐसा नहीं है कि पश्चिती सभ्यता में होता है, भारतीय सभ्यता में नहीं? ऐसा नहीं है कि पश्चिमी सभ्यता में ही ऐसा होता है बल्कि आज के आधुनिक भारतीय समाज भी इसका अंग बनता जा रहा है। रायना और कथावाचक एक–दूसरे से बात करते समय ऐसा महसूस करते है कि वह किसी से छिपने का प्रयास करते है। ''हम कमरे में अकेले थे, लेकिन हमें लग रहा था जैसे हम किसी से छिपकर बाते कर रहे है।''

परिवार संस्था का जो रूप इस उपन्यास में दिखाया गया है, वह लगभग इस उपन्यास के सभी पात्रों में हैं कथावाचक मैं कभी–कभी अपने परिवार, घर, कहन के बारे में सोचता है किन्तु वह अपने परिवार के लिए इतना नीरस एंव उदासीन हो गया है कि अपने परिवार की यादों को अधिक देर रहने नहीं देता।'' कमरे की नीरसता में उसका स्वर मुझे अज़ीव–सा आत्मीय लगा जैसे मैं अपने घर में हूँ बहुत वर्ष पहले और रसोई में कुछ काम करते हुए मेरी बड़ी बहन धीरे–धीरे गुनगुना रही है उस छोटे से शान्त स्वर में एक घरेलू

लापरवाही–सी थी, जिसे किसी भी 'दुख' से जोड़ पाना असम्भव था।'' इस उपन्यास में कथावाचक के जीवन के अतीत का कोई चित्र प्रस्तुत नहीं किया है। कथा कभी वर्तमान में चली है, तो कभी रायना और मीता की स्मृति में। कथावाचक के बचपन के अनायास चित्रण कभी–कभी हो जाता है। ''वह मायावी–सा क्षण–जब तुम्हें लगता है, ऐसा पहले भी कभी हुआ है बहुत पहले कभी बचपन में। ऐसा ही आलोक थर्मस की बोतल के पास रखा हुआ सूटकेस फर्श पर बिखरे हुए खाकी रेपिंग पेपर लगता था जैसे यह पहले भी तुमने देखा है किसी दूसरे कमरे में, किसी अन्य घंड़ी में।''

निर्मल वर्मा के इस उपन्यास में आधुनिकता का आधार लिए हुए है। मीता जानता है कि उसकी मॉ रातभर किसी अन्य पुरुष के साथ थी। इस बात का उस बच्चे की मानसिकता पर क्या प्रभाव पड़ता है। निर्मल जी ने अपने इस उपन्यास में परिवार के प्रति पात्रों की बढ़ती उदासीनता और लोगों में परिवार संस्था के पूरे स्वरूप को ही बदल दिया है। इस उपन्यास के सभी पात्र परिवार संस्था के स्वरूप का विरोध करते हुए नज़र आते है। निर्मल वर्मा के पात्र आधुनिक जीवन–मूल्यों में अपना जीवन व्यतीत करते नज़र आता है।

''लाल टीन की छत'' उपन्यास में भारतीय परिवार के माध्यम से नैतिक मूल्यों में परिवर्तन दिखाया है। इस उपन्यास का केन्द्रीत पात्र काया है। काया एक ऐसी लड़की है, जिसकी कोई भाषा नहीं है। वह घटनाएँ, लोग, जगह जिन्हें वह केवल महसूस करती है और अपने व्यवहार से व्यक्त करती है। काया के चित्रण में एक विकास क्रम दिखाई देता है। काया की मॉ गर्भावती होती है, परन्तु वह इस अवस्था को नहीं समझ पाती। काया जिस परिवार से सम्बन्ध रखती है, उस परिवार में अकेलेपन का अपना ही महत्वपूर्ण स्थान है। वह हर किसी से जुड़ने का प्रयास करती है, परन्तु जुड़ नहीं पाती। जिसमें लामा, उसका छोटा भाई, गिन्नी, नौकर मॅगतू देवी काली माता, चाचा का लड़का बीरू, नथवाली औरत है। वह जितना इन सबसे जुड़ने का प्रयास करती है, उतना ही सबसे अपने आपको अलग और अकेला पाती है। काया के चाचा कहते है कि ''ऐन मौके पर–जब रिक्शा चलने वाला था वे उतर गए और तेज कदमों से मिस जोसुआ के बरामदे की तरफ बढ़ने लगे, जैसे अंतिम क्षण उन्हें कोई चीज याद हो आई है, जिसे वे अधुरा छोड़ गए थे। वे सीधा मिस जोसुआ के पास आए और उनसे विदा मॉगी।''

काया परिवार के साथ होते हुए भी अकेलापन महसूस करती है। काया के पिता दिल्ली में रहते है और बाकि परिवार को पहाड़ी इलाके में रहते है। मॉ गर्भवती होने के कारण अकेले रहना चाहती है। काया के पिता उससे भौगोलिक रूप से तो दूर है ही, साथ–ही–साथ उससे मानसिक रूप से भी दूर है। काया का भाई छोटा उसके अकेलेपन का साथी बनने का प्रयास करता है परन्तु बन नहीं पाता। वही काया की मॉ उससे कहती है कि उन्होंने काया के सिर पर अपने हाथों से ढॉप लिया उस रात के बाद पहली बार काया से बोली थी। पहली बार उसे अपने हाथों से छुआ था वहॉ, जहॉ बहुत से सुनसान किस्म के ऑसू जमा थे और मॉ की अंगुलियॉ लगते ही वे झरने लगे।''

निमल वर्मा के इस उपन्यास में जन्म, मृत्यु, सेक्स आदि से संबधित जानकारी काया के लिए गोपनीय और रहस्यमय वातावरण की वह दुनिया है, जिसमें वह इन सभी चीजों को अनुभव तो करती है, पर समझ नहीं पाती है। मिस जोसुआ इस उपन्यास की महत्वपूर्ण पात्र है, जो अपने परिवेश और परिवार से बिल्कुल अलग हो चुकी है। वे काया के पड़ोस में रहने वाली 'लाल टीन की छत' की मालकिन है। वे अपने बुढ़ापे के कारण स्वंय को अकेला पाती है और अपनी मृत्यु का इंतजार करती है। उपन्यासकार ने मिस जोसुआ का चित्रण इस प्रकार किया है–''मिस जोसुआ बहुत पतली–दुबली और औरत थीं–सींक–सी लम्बी, सिर पर हमेशा उनी हैट पहने रखतीं, जिसके बाहर सफेद बाल छितराकर माथे पर झूलते रहते। वह निचली मंजिल में रहती थीं।'' मिस जोसुआ के परिवार के नाम पर कोई नहीं है। वे पूर्णतः अकेली है और स्वंय ही सारे काम अकेले ही करती है। मिस जोसुआ लड़ाई के दिनों में शिमला आई थी। तब उनके पति भी उनके साथ रहते थे, परन्तु कुछ समय के बाद वे इग्लैंड लौट गये, पर मिस जोसुआ को प्रकृति से इतना प्रेम था कि वे वापस नहीं जा सकी। मिस जोसुआ के पति शुरूआत में दो–तीन बार उनसे मिलने आया करते थे और मिस जोसुआ का अपने पति की चिट्ठियों से भरा रहता था। अब उन्होंने अकेला रहना सीख लिया है।

काया की बुआ अपनी बेटी लामा से सदैव परेशान रहती है, क्योंकि लामा के पिता की मृत्यु हो चुकी है और बुआ अकेली है। बुआ कहती है कि ''तुम उसे गृहस्थी कहते हो? ''वह खुद दिल्ली में रहता है, दोनों बच्चे अनाथों की तरह जगलों में घूमते हैं–मैं आज तुम्हें बताती हूँ, लामा को मैंने इस घर में भेजा, यह मेरी सबसे

बड़ी गलती थी।'' बुआ अपने भाईयों से मिलने जाती है और कहती है कि–''तुम दोनों भाई मुझसे अलग रहते हो साथ में दो–तीन बार भागी–भागी तुम्हारे पीछे आती हूँ कभी इनके बारे में सोचा है।'' निर्मल जी के इस उपन्यास में परिवार का स्वरूप बिल्कुल बिखरा हुआ है। काया का परिवार खण्डित स्वरूप लिये हुए है। कहने के लिए परिवार है, परन्तु प्रत्येक सदस्य ने अपनी एक अलग दुनिया बना रखी है। जिसमें कोई प्रवेश नहीं कर सकता।

निष्कर्ष–निर्मल वर्मा की कहानियॉ हो या उपन्यास सभी में आरम्भ से अंत तक एक अजीब–सा अकेलापन छाया रहता है। उनके इस अकेलेपन के कारण, भारतीय दर्शन की कुछ आध्यात्मिक और रहस्यात्मक छायाएँ प्रकट होती है। अकेलापन मूलतः औद्योगिकरण, शहरीकरण द्वारा ही उत्पन्न हुआ, इसके परिणाम स्वरूप सामाजिक पारिवारिक संबंध भी टूटते नज़र आते है। जिससे उनके काव्य–साहित्यों में जीवन की यथार्थता का सुन्दर चित्रण मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. गिल,गगनः संसार में निर्मल वर्मा, रेमाधव पब्लिकेशंस, नई दिल्ली2006
2. मदान इन्द्रनाथः आधुनिक हिन्दी और उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2000
3. प्रेमचंदःगोदान, प्रकाशन संसनि, नई दिल्ली 2014
4. वर्मा, निर्मलः भारत और यूरोपः प्रतिश्रुति के श्रेत्र, राजकतल प्रकाशन, नई दिल्ली 2001
5. वर्मा निर्मलः परिन्दे, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2010
6. वर्मा, निर्मलः बीच बहस में, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2010
7. वर्मा निर्मलः वे दिन भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2010
8. इष्टवाल नरेन्द्रः कथाकार निर्मल वर्मा, श्याम प्रकाशन, जयपुर 2001
9. वाजपेयी, अशोक, निर्मल वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2001
10. वर्मा निर्मलः एक चिथड़ा सुख, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2009

डॉ के सोनिया
(M.A, B.ED, PH.D)
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग , अण्डमान कॉलेज, पोर्टब्लेयर अण्डमान.

LBP PUBLICATION